B.A IInd year

Ist paper (Social Control and Social Change)

Topic – Concept of Social Change

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा

Reading material by Prof Sangeeta Pandey

Concept of Social Change

सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य समाज में होने वाले परिवर्तन से है। किसी भी समाज की पूर्व की स्थिति से भिन्न जो नवीन स्थिति उत्पन्न हो जाती है उसे परिवर्तन कहते हैं। चूंकि समाज को विचारकों ने - 'सामाजिक सम्बन्धों के (जाल से), व्यवस्था से स्पष्ट किया है इसीलिये यदि इस सम्बन्धों की व्यवस्था (समाज) में पूर्व की स्थिति से भिन्न कोई स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो उसे सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। MacIver एवं Page ने 'Society' पुस्तक में इसी अर्थ में, सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार –

"... Our direct concern as sociologists is with social relationships. It is the change in these which alone we shall regard as social change..." (MacIver and Page Society Pg 511)

...."समाजशास्त्री होने के नाते हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध केवल सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन से है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"

जब हम समाज के पक्षों पर गौर करते हैं तो हमें समाज के दो पक्ष स्पष्ट दिखते हैं:–

1. समाज का संरचनात्मक पक्ष (समाज की संरचना)
2. समाज का प्रकार्यात्मक पक्ष (समाज में कार्य या भूमिकायें जो प्रस्थिति के अनुरूप हैं)

Scanned by CamScanner

अतः जब हम सामाजिक परिवर्तन की बात करेंगे तो 'समाज के ढाँचे और कार्यों में होने वाले परिवर्तन की बात करेंगे। किंग्सले डेविस ने अपनी पुस्तक Human Society page 622 में सामाजिक परिवर्तन को इसी अर्थ में स्पष्ट किया है:— "सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक संगठन अर्थात समाज के ढाँचे और भूमिकाओं में होने वाले परिवर्तन से है।"

"By social change I understand a change in social structure eg the size of society, the composition or balance of its parts or the type of its organisation."

कुछ समाजशास्त्री सामाजिक प्रक्रियाओं, प्रतिमानों एवं सामाजिक अन्तःक्रिया के किसी स्वरूप या सामाजिक संगठन के किसी निर्माणक महत्वपूर्ण तत्व में संशोधन को व्यक्त करने के लिए भी सामाजिक परिवर्तन का प्रयोग करते हैं।

Gillin and Gillin ने Cultural Sociology page 564 पर सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए लिखा है— "जीवन के स्वीकृत ढंग में जब (परिवर्तन होने लगता है) संशोधन होने लगता है तो हम इसे **सामाजिक परिवर्तन** कहते हैं।..."

"Social changes are variations from the accepted modes of life, whether due to alteration in geographic conditions, the cultural equipment, composition of population or ideologies and whether brought about by diffusion or invention with the group..."

Scanned by CamScanner

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, प्रकार्य, समाज में जीवन जीने के स्वीकृत तरीकों तथा सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले संशोधन हैं या नवीन स्वरूप हैं। ये परिवर्तन अनेक कारकों द्वारा प्रभावित हो सकते हैं चाहे वे भौगोलिक कारकों में बदलाव के कारण हों, सांस्कृतिक कारकों से प्रेरित हों, जनसंख्या के संगठन (संरचना) में बदलाव से उत्पन्न हो, किसी आविष्कार या प्रौद्योगिकी परिवर्तन से प्रेरित हुये हो या क्रांतिक परिवर्तन से उत्पन्न हुये हो। प्रसार (सांस्कृतिक) भी सामाजिक परिवर्तन के कारण रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ—

1. समाज में परिवर्तन निरन्तर, तथा आवश्यक रूप से होता है।
2. सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है। मैकाइवर का विचार है कि "गुणात्मक परिवर्तनों (सा॰सम्बन्धों में परिवर्तन) की निश्चित माप नहीं पाने के कारण ये जटिल तथ्य होते हैं।"
3. आवश्यकताओं के बदलने से, विचार करने एवं कार्य करने के तरीकों में परिवर्तन होने से सामाजिक परिवर्तन होता रहता है।
4. सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध, समाज की संरचनात्मक पक्ष, एवं समाज के प्रकार्यात्मक पक्ष दोनों से होता है।
5. सामाजिक परिवर्तन तुलनात्मक होता है।
6. सामाजिक परिवर्तन एक कार्यात्मक प्रक्रिया है।
7. सामाजिक परिवर्तन अनेक कारकों के कारण होता है।
8. सामाजिक परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट है। हमेशा लेकिन निश्चित भविष्यवाणी सम्भव नहीं।

Scanned by CamScanner